MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

विद्यावार्ता®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Issue-33, Vol-11 January to March 2020

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with CamScanner

28) संत साहित्य में लोककल्याण
डॉ. सय्यद अमर फकिर, जि. उस्मानाबाद ||121

29) महाभारतकालीन शिक्षण संस्कृति : एक विवेचन
डॉ. मारुति नन्दन भारद्वाज, पटना ||124

30) अमृतलाल नागर उपन्यासों में आँचलिकता
चौधरी तृप्तीबहन झीपरभाई, राजकोट ||130

31) आधुनिक राष्ट्रीय अवधारणा और भारतीय साहित्य
शालिनी देवी ||133

32) छत्तीसगढ़ में आदिवासियों के आर्थिक विकास में सहायक लाख उद्योग
डॉ. ए. के. धनगाये, डोंगरगांव ||137

33) अशोकनगर जिले के ऐतिहासिक स्थलों का अध्ययन
जयप्रकाश दोहरे, जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश ||139

34) स्त्री संघर्ष की आवाज : तिरिया चरित्र
प्रा. डॉ. सर्जेराव नारायणराव जाधव, हदगाव ||143

35) कम्प्यूटर और प्रयोजनमूलक हिन्दी
चौहान महारुद्रप्रतापसिंह बी., राजकोट ||146

36) समकालीन हिंदी कविता में वृद्ध विमर्श
संतोष नागरे, जि.बीड ||150

37) अमरकान्त के कथा साहित्य में मध्यवर्ग व निम्न मध्यवर्ग की संवेदना एवं उनकी ...
डिम्पल पारीक, जयपुर, राजस्थान ||153

38) भारतीय लोकतंत्र के बदलते स्वरूप में चुनाव और मतदान व्यवहार
राजेश कुमार रमण, प्रयागराज ||158

39) उत्तराखण्ड में पर्यटन और रोजगार
डॉ० पी०एन० तिवारी, रुद्रपुर (ऊधमसिंह नगर) ||163

40) चिरांद की पुरातात्त्विक संस्कृतियाँ
डॉ. मो. शरफराज आलम, मधेपुरा ||171

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

36

समकालीन हिंदी कविता में वृध्द विमर्श

संतोष नागरे
सहा.प्रा.-हिन्दी विभाग,
र.भ. अट्टल महाविद्यालय गेवराई, जि.बीड

****

२१ वीं सदी मूलत: विमर्श की सदी है। जिसमें हाशिए पर जीवन जीने के लिए विवश स्त्री, दलित, आदिवासी, किन्नर, मुस्लिम आदि के साथ वृध्द विमर्श की अनुगूँज स्पष्ट सुनाई देती है। समकालीन हिंदी कविता वृध्दों के शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा मूल्य आधारित समस्याओं के अनेक आयामों पर प्रकाश डालती है। वैश्वीकरण से उपजी बाजारु उपभोक्तावादी संस्कृति 'बाप बड़ा न बेटा, सबसे बड़ा रुपया' इस सूत्र की नींव पर खड़ी है। इस संस्कृति में पैसा ही मूल्य बन जाने से मानवीय मूल्यों को दरकिनार किया जा रहा है। जहाँ एक ओर गाँव को उजाड़कर शहर फल-फूल रहे हैं, वहीं दूसरी ओर संयुक्त परिवार व्यवस्था टूट रही है। 'गीव एंड टेक' के इस दौर में माँ की ममता, पिता के अनुशासन, बहन का प्रेम एवं भाई के स्नेह का मूल्य आँका जाने से रिश्तों के बीच की नर्मी सूखती जा रही है। परिवार का रिमोट कंट्रोल आज उसी के पास है, जो सबसे अधिक कमाता है। वृध्द जो कभी परिवार में सम्मान के साथ जीवन व्यतीत करते थे वे आज उपेक्षा, तिरस्कार, अपमान झेलने के लिए विवश है। 'युज एंड थ्रो' के इस दौर में वृध्द माता-पिता को आउट डेटेड समझकर वृध्दाश्रम भेजा जा रहा है। वृध्दाश्रम की विकृति से लड़ते वृध्दों की घुटन, टूटन तथा अकेलेपन की दर्दभरी दास्तान को समकालीन हिंदी कवि राजेश जोशी, जयप्रकाश कर्दम, अनामिका, निर्मला पुतुल, अरुण कमल, महेंद्रकुमार सिरोठिया, कुमार अंबुज, ऋतुराज, प्रेमरंजन अनिमेष, आलोक श्रीवास्तव तथा संजय मासूम आदि ने अपनी कविताओं के माध्यम से दो टूक शब्दों में बयान किया है।

औद्योगिक क्रांति के पश्चात विकसित होती नयी शहरी संस्कृति ने संयुक्त परिवार व्यवस्था को तहस-नहस किया। राजेश जोशी ने 'संयुक्त परिवार' कविता के माध्यम से एकल परिवार की कमियों को दर्शाते हुए संयुक्त परिवार के महत्व को अधोरेखित किया है। अपनी बचपन की स्मृतियों के माध्यम से वे महसूस करते हैं कि बाबा, दादा-दादी, माता-पिता, भाई-बहन, चाचा-चाची के आत्मीयता भरे व्यवहार से घर स्वर्ग थे। आज हर समय बंद रहनेवाले घर, घर में कम होती जा रही सदस्यों की संख्या, सभ्य बनने की कोशिश में अपनी सभ्यता एवं संस्कृति की जड़ों से कटता मनुष्य संवाद के अभाव में संवेदनाहीन होकर महज एक मशीन का पूर्जा बनकर रह गया है। संयुक्त परिवार व्यवस्था के टूटने से हुई अपरिमित क्षति को बयान करते हुए राजेश जोशी कहते हैं,-

"इस तरह कभी कोई नहीं लौटा होगा /
बचपन के उस पैतृक घर से
वहाँ बाबा थे, दादी थी, माँ और पिता थे
लड़ते- झगड़ते भी साथ- साथ रहते थे सारे भाई-बहन
कोई-न-कोई हर पक्ष बना ही रहता था घर में
पल-दो-पल को बिठा ही लिया जाता था हर आनेवाले को
पूछ लिया जाता था गुड़ और पानी को
खबर मिल जाती थी बाहर गए आदमी की
ताला देखकर शायद ही कभी कोई लौटा होगा घर से
टूटने के क्रम में टूट चुका है बहुत कुछ, बहुत कुछ।"१

वैश्वीकरण के इस दौर में महानगरीय सभ्यता एवं संस्कृति के फलने - फूलने से भावनिक विकास रुक गया है। भौतिकता की आँधी ने अपने बच्चों पर निर्भर वृध्दों को सबसे अधिक आहत किया है। परिवार में भौतिक सुख-सुविधाएँ होने पर भी कोई समझनेवाला न होने की पीड़ा उन्हें अधिक आहत करती है। क्षमाप्रार्थी होकर अपना वृध्दत्व बिताने की विवशता आज हर घर की कहानी है। इस विवशता से मुक्ति के लिए वृध्दाएँ गाँव जाकर अपनी बची हुई जिन्दगी सुकून के साथ व्यतीत करना चाहती है। 'वृध्दाएँ धरती का नमक है' कविता के माध्यम से घर-घर की कहानी को बयान करती हुई अनामिका कहती हैं,-

"रहती है वृध्दाएँ, घर में रहती है
लेकिन ऐसे जैसे अपने होने की खातिर हो क्षमाप्रार्थी
लोगों के आते ही बैठक से उठ जाती, /
चुप-चुप रहती हैं, छाया-सी, माया-सी
पति-पत्नी जब भी लड़ते हैं उनको लेकर /
कि तुम्हारी माँ ने दिया क्या, किया क्या
कुछ देर करती है अनसुना / कोशिश करती है कुछ पढ़ने की
बाद में टहलने लगती है / और सोचती हैं बेचैनी से -गाँव गए

Scanned with CamScanner

बहुत दिन हुए।"२

जयप्रकाश कर्दम ने 'तुम्हारी कोख में' कविता के माध्यम से वृध्द माँ को लेकर पति-पत्नी के बीच होते विवाद तथा आज की कलह भरी परिवार व्यवस्था की पोल खोली है। बेटा अपनी वृध्द माँ को अपने पास इसलिए नहीं रख पाता की उसकी पत्नी उसे बर्दाश्त नहीं करती। माँ और पत्नी इन दो पाटों के बीच पिसता बेटा अपनी वृध्द माँ की उपेक्षा को मूक दर्शक की भाँति सिर्फ देखता रहता है। अपनी माँ की तरह बच्चे भी दादी को पसंद नहीं करते क्योंकि वह उनके लिए आउट डेटेड हो गयी है। माँ का आंचल सदैव ममता की खुशबू से भरा होने पर भी उन्हें दादी के शरीर और कपड़ों से बदबू आती है। आज की युवा पीढ़ी ममता के मर्म से अनभिज्ञ है। माँ की ममता को अधोरेखित करते हुए जयप्रकाश कर्दम कहते हैं,-

"मेरे बच्चों को भी / तुम पसंद नहीं हो
उनके लिए आउट डेटेड हो / उनमें से कोई भी दो घड़ी
तुम्हारे पास बैठने के लिए राजी नहीं है
बदबू आती है उन्हें / तुम्हारे शरीर और कपड़ों से
शायद वें अभी / इस बात का मर्म नहीं जानते
कि मां का आंचल सदैव / ममता की खुशबू से भरा होता है
माँ के शरीर से कभी बदबू नहीं आती
शायद जान भी नहीं पायेंगे वे / इस सच को क्योंकि
तुम उनकी माँ नहीं मेरी माँ हो।"३

अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए संकल्पबध्द हर माँ का जीवन कभी न रुकनेवाली संघर्षयात्रा ही है। दिन में जगते और रात में ऊँघते हुए चलना उसके जीवन की नियति है। पारिवारिक जिम्मेदारियों का सफलतापूर्वक निर्वहन करनेवाली माँ की ममता को धरती की सहनशीलता के साथ जोड़ती हुई निर्मला पुतुल कहती हैं,-

"पीढ़ा पर बैठ / ढिबरी की टिमटिमाती रोशनी में
पतल टिपती माँ / कब सोती जागती हम नहीं जानते
कितना जागती / हमारी नींद के लिए
क्या माँ सचमुच धरती है / जो कभी नहीं थकती है।"४

जयप्रकाश कर्दम की कविता 'लालटेन' बेटे-बेटियों के जीवन में खुशियों के रंग भरनेवाली माँ की बेरंग जीवन की करुण कहानी है। जो हमारे मन-मस्तिष्क को झकझोरती है। अपने पति की मृत्यु के पश्चात 'लालटेन' की तरह जलती हुई अपने बच्चों की अंधेरी जिन्दगियों को रोशन करती है। वही माँ आज अपने भरे-पूरे परिवार से दूर गाँव के टूटे-फूटे घर में अकेली जीवन जीने के लिए विवश है। माँ के जीवन में व्याप्त अंधकार की दर्दभरी दास्तान को बयान करते हुए जयप्रकाश कर्दम कहते हैं,-

"सब अपने आप में मस्त हैं /
अपनी-अपनी फैमिलियों में व्यस्त हैं
सब अच्छा पी-खा रहे हैं / दुनिया के साथ /
कम्पीटीशन में आ रहे हैं
सबके जीवन में आह्लाद है, / सबके जीवन में सवेरा है
लेकिन, मां की जिन्दगी में / आज भी अंधेरा है।"५

वैश्वीकरण से उपजी उपभोक्तावादी संस्कृति के इस दौर में युवा पीढ़ी अपने ही जीवन में मस्त एवं व्यस्त है। अतः परिवार व्यवस्था टूट रही है। परिवार को जोड़नेवाले वृध्द उपेक्षा, अपमान एवं तिरस्कार का शिकार होकर मृत्यु का इंतजार करने के लिए विवश है। मूल्यों के पतन से पारिवारिक जीवन में बढ़ते अंधकार को बयान करते हुए आलोक श्रीवास्तव कहते हैं,-

"घर के बुजुर्ग लोगों की आँखें ही बुझ गयी
अब रोशनी के नाम पे कुछ भी नहीं रहा।"६

बच्चों के जीवन में माँ की ममता के साथ ही पिता के अनुशासन की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। पिता सिर्फ अभिभावक ही नहीं रक्षक भी होते हैं। अतः हर बेटी अपने पिता के साये में अपने आप को सुरक्षित महसूस करती है। इसीवजह से कवयित्री निर्मला पुतुल भी रात घर आँगन में चाँद-सितारों से बातें करती बेफिक्र सो जाती थी। पिता हर संकट से अपनी लाड़ली को बचाते थे। पिता की मृत्यु के पश्चात मंगल बापा की देहरी पर बैठनेवाले वृध्दों की जगह जुआरियों एवं पियक्कड़ों का जमघट है। जिसके कारण गाँव में छेड़छाड़ की घटनाएँ अत्यधिक बढ़ रही है। गाँव की बहू-बेटियों का डर के मारे घर- आँगन से बाहर निकलना मुश्किल हो गया है। आज की भयावह स्थितियों के बीच चाहरदीवारी के भीतर कैद होकर घूटती नारी की पीड़ा तथा उससे मुक्ति के लिए अपने पिता को सशब्द याद करती निर्मला पुतुल 'स्वर्गवासी पिता के नाम पाती' कविता में कहती हैं,-

"बाबा !
इन्हीं लोगों ने छीना है बचपन / छीने हैं मेरे बिनब्याहे सपने
मेरे हिस्से का वो खुला आकाश / मेरी उन्मुक्त हँसी, मेरी जवानी
कैद होकर रह गयी हूँ मैं / एक कमरे में जीवन गुजार रही हूँ
बाबा ! बहुत याद आते हो तुम....."७

सेवानिवृत्त आदमी परिवार एवं समाज की उपेक्षा का शिकार होते हैं। निवृत्त आदमी भी किसी-न-किसी काम आ सकता है। अरुण कमल 'निवृत्त' कविता के माध्यम से यही समझाते हुए

Scanned with CamScanner

कहते हैं की जिसतरह पेड़ कटने पर उसका थम्भ थके बैल तथा गाभिन गाय का खूँटा बन जाता है उसीतरह निपुत्त आदमी अन्न उगाने के न सही पर सूखते धान के पास बैठकर कौओं को हाँकने के काम तो आ सकता है। जीवन के हर क्षेत्र में अपनी क्षमता के अनुसार अपना अमूल्य योगदान देनेवाले वृध्दों की अहमियत को अधोरेखित करते हुए अरुण कमल कहते हैं,-

"जैसे टूट जाये हाथ की हड्डी / और गिलास भी उठा न सके
क्या मैं भी पूरा-का-पूरा / बेकाम हो जाऊँगा बीच राह
गिरा जूते का तल्ला / फूटने के बाद भी मिट्टी की सुराही
जाड़े में बोरसी बन जाती है / वैसे ही मैं भी तो काम आ सकता हूँ
अन्न उगा न सकूँ तो क्या
सूखते धान के पास बैठ कौआ तो हाकूँगा
पेड़ कटने पर बचा हुआ थम्भ
किसी थके बैल या गाभिन गाय का
खूँटा बन जाएगा।"८

प्रेमरंजन अनिमेष अरुण कमल की तरह वृध्द का सम्मान करनेवाले कवि हैं। अत: वे किसी का हाल पूछने, रास्ता बताने तथा रास्ता पार कराने के सामाजिक दायित्व को बखूबी निभाते हुए हर परिणाम को भुगतने के लिए तत्पर दिखाई देते हैं। प्रेमरंजन अनिमेष यह जानते हुए भी की वृध्द को सड़क पार कराने पर काम पर हुई देरी से हाजिरी काटी जाएगी, फिर भी वे ठिठककर उन्हें सड़क पार कराते हैं। कवि का वृध्द को सड़क पार कराना आज की भयावह स्थितियों के बीच से राह निकालना है। कवि को चौबीसों घंटे में अब इसी एक मिनट में जीवन की सार्थकता नज़र आती है। सामाजिक सरोकार तथा वृध्दों के प्रति अपनी असीम करुणा को बयान करते हुए प्रेमरंजन अनिमेष कहते हैं,-

"एक मिनट के लिए / किसी का हाल पूछने रुकूँगा
और बारिश में घिर जाऊँगा / एक मिनट
राह बताने लगूँगा अजनबी को / और गाड़ी छूट जाएगी
और एक मिनट थमकर
एक वृध्द को सड़क पार कराऊँगा
और काम पर मेरी हाजिरी कट चुकी होंगी
फिर भी चलते-चलते / ठिठकूँगा / एक मिनट के लिए
कि चौबीसों घंटे में अब / इसी एक मिनट में / बची है जिन्दगी।"९

युवाओं की तरह वृध्दों का जीवन भी आशावादिता से भरा-पूरा होता है। वे अपने अधूरे स्वप्नों को अपने बच्चों द्वारा पूर्णत्व प्रदान करना चाहते हैं। अत: वे अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए उन्हें रोज तड़के जगाकर उनसे भिन्न कुछ करने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। वृध्दों की इस आशावादिता को बयान करते हुए ऋतुराज कहते हैं,-

"यह न कहो कि / बूढ़े
युवकों से कम आशावान होते हैं
वे जीते हैं तो अपनी खाँसी की आखिरी उड़ान में भी
वे रोज तुम्हें तड़के जगा देते हैं
जिससे तुम महसूस कर सको
कि तुम्हें उनसे भिन्न कुछ करना है।"१०

निष्कर्ष :-

औद्योगिक क्रांति के पश्चात बढ़ते शहरीकरण ने संयुक्त परिवार व्यवस्था को नष्ट कर एकल परिवार व्यवस्था की ओर कदम बढ़ाया। तत्पश्चात वैश्वीकरण से उपजी अर्थकेंद्रित उपभोक्तावादी संस्कृति में उसका दायरा बढ़ जाने से घर का रिमोट कंट्रोल वृध्द के हाथों से निकलकर परिवार में सबसे अधिक कमानेवाले के पास आ गया। परिणामत: वृध्द माता-पिता को बोझ समझा जाने लगा। इसी बोझ के चलते वृध्दों को परिवार में नारकीय जीवन जीने की विवशता झेलनी पड़ रही है। बच्चों द्वारा अपने बूढ़े माँ-बाप की संपत्ति हड़पकर उन्हें दर-दर की ठोकरें खाने के लिए मजबूर करनेवाले सपूतों की शिकायतें दिनों-दिन बढ़ती ही जा रही है। अपने अंधकारमय भविष्य से चिंतित वृध्दों को मजबूरन न्यायालय का दरवाजा खटखटाना पड़ रहा है। वृध्दावस्था की इस करुण कहानी को समकालीन हिंदी कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करते हुए वृध्द विमर्श को साहित्य के केंद्र में लाने का सफल प्रयास किया। कुल मिलाकर समकालीन हिंदी कविता ने वृध्द समूह की पीड़ा को बयान कर उनके यथोचित सम्मान से टूटती परिवार व्यवस्था को बचाने की सार्थक कोशिश की है। अंत में संजय मासूम के शब्दों में सिर्फ इतना ही कह सकते हैं,-

"वो सूखा पेड़ है पर काटना मत
परिन्दों का उसी पर घोंसला है।"

संदर्भ ग्रंथ :-

१) राजेश जोशी, दो पंक्तियों के बीच, पृ.५४
२) अनामिका, खुरदरी हथेलियाँ, पृ.४९
३) जयप्रकाश कर्दम, बस्तियों से बाहर, पृ. ४८
४) निर्मला पुतुल, बेघर सपने, पृ.११
५) संपा. राम चंद्र, प्रवीण कुमार, दलित चेतना की कविताएँ, पृ.४४-४५
६) संपा. रवींद्र कालिया, हिंदी की बेहतरीन ग़ज़लें, पृ.१३०
७) निर्मला पुतुल, बेघर सपने, पृ.३९
८) अरुण कमल, नये इलाके में, पृ.३०
९) संपा. विश्वनाथप्रसाद तिवारी, आधुनिक भारतीय कविता संचयन, १९५०-२०१०, पृ.२२३
१०) ऋतुराज, अबेकस, पृ.१८

Scanned with CamScanner